

रीवा के सुंदरजा आम और मुरैना की गजक को मला जीआई टैग

चर्चा में क्यों?

26 मार्च, 2023 को केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने सोशल मीडिया पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि मध्य प्रदेश के रीवा ज़िले के सुंदरजा आम और मुरैना की गजक को GI टैग प्रदान किया गया है।

प्रमुख बंदि

- गौरतलब है कि सुंदरजा आम मध्य प्रदेश के रीवा ज़िले के गोवदिगढ़ कस्बे में बहुतायत में होता है। फलों के राजा आम की यह एक विशेष प्रजाति है। सुंदरजा सरिफ भारत के लोगों की ही पसंद नहीं है बल्कि विदेशों में भी इसकी चर्चा है। सुंदरजा आम की खासियत यह है कि यह बनिा रेशे वाला होता है और इसमें पाई जाने वाली शर्करा का प्रकार कुछ ऐसा है कि इसे शुगर के मरीज भी खा सकते हैं।
- वधिय क्षेत्र की शान समझे जाने वाले सुंदरजा आम का उत्पादन पहले रीवा ज़िले के गोवदिगढ़ कले के बगीचों में होता था लेकिन कालांतर में गोवदिगढ़ इलाके के साथ ही रीवा शहर से लगे कुटुलिया फल अनुसंधान केंद्र में भी बहुतायत मात्रा में इसकी खेती की जाती है।
- हालाँकि गोवदिगढ़ के बागों में होने वाला सुंदरजा आम हल्का सफेद रंग लयि होता है जबकि रीवा के कुटुलिया फल अनुसंधान केंद्र में उत्पादित होने वाला सुंदरजा आम हल्का हरा होता है।
- सुंदरजा आम की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वर्ष 1968 में इस आम के नाम पर डाक टिकट जारी किया गया था।
- वही, मुरैना का गजक एक प्रकार की मठिाई है। अगर गजक के साथ मुरैना का नाम जुड़ जाए तो लोग इसे क्वालटि और स्वाद के लयि सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। इसीलिये मुरैना की गजक का स्वाद पूरे देश में प्रसिद्ध है।
- गजक बनाने का काम मुरैना का मुख्य उद्योग है। मुरैना जैसे छोटे ज़िले में लगभग गजक की एक हज़ार से अधिक दुकानें हैं। अगर गुड़ और तल से बनी मठिाइयों की बात आए तो गजक को श्रेष्ठ माना जाता है। इस गजक का इस्तेमाल लोग पूरे साल करते हैं, लेकिन सर्दियों में इसे खाना गुणकारी माना जाता है।
- वदिति है कि हाल ही में दलिली में प्रगति मैदान में लगी फूड फेस्टिवल में मुरैना के गजक को इटली, दुबई, बर्टिन से आए डेलीगेट्स ने काफी पसंद किया था।
- गौरतलब है कि किसी भी रीजन का जो क्षेत्रीय उत्पाद होता है, उससे उस क्षेत्र की पहचान होती है। उस उत्पाद की ख्याति जब देश-दुनिया में फैलती है तो उसे प्रमाणित करने के लयि एक प्रक्रिया होती है, जिसे 'जीआई टैग' यानी जयिोग्राफिकल इंडीकेटर (भौगोलिक संकेतक) कहते हैं। किसी क्षेत्र के किसी खास उत्पाद के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया वर्ष 2003 में शुरू की गई थी। इसलिये जीआई टैग को 2003 में शुरू किया गया। भारत में सबसे पहला जीआई टैग 2004 में पश्चिम बंगाल की Darjeeling Tea (दार्जलिगि चाय) को दिया गया था।
- किसी भी क्षेत्र की विशेष वस्तु जो उस क्षेत्र के अलावा कहीं और नहीं पाई जाए, उसे विशेष पहचान दलाने के लयि जीआई टैग दिया जाता है। जीआई टैग उद्योग संवर्धन और आंतरिकि व्यापार वभिाग द्वारा जारी किया जाता है, जो वाणजिय मंत्रालय के तहत संचालित होता है।
- उल्लेखनीय है कि सुंदरजा आम और मुरैना की गजक के साथ ही छत्तीसगढ़ के धमतरी ज़िले के नागरी दूबराज चावल को भी जीआई टैग मला है।